मौन की महिमा

कहने में आता है कि जो व्यक्ति जितना अभिलाषी होता है, दूसरे लोग उसे सुनने के लिए उतने ही अधिक लालायित होते हैं। कम बोलने से शक्ति संचय होती है। सभी के साथ सम्बन्धों में समरसता बनी रहती है तथा रचनात्मकता में भी अभिवृद्धि होती है। अल्पभाषिता तथा आध्यात्मिकता का आपस में गहरा सम्बन्ध है। आध्यात्मिकता के शिखर पर पहुँचने के लिए मौन का बहुत कुछ योगदान हो सकता है। प्रभु-मिलन के गहरे अनुभव करने के लिए अन्तर्मुखता बड़ी सहायक होती है। स्वयं से बात करने के लिए तथा अपनी कमियों का अहसास करने के लिए भी अन्तर्मुखी होने की आवश्यकता है।

मौन सर्व मनोकामनाओं को पूर्ण कराने में, सिद्धि-स्वरूप बनाने में, जीवन की सर्वोच्च मंजिल तक पहुँचाने में तथा उत्तरोत्तर उन्नति कराने में बहुत अधिक सहायक होता है। इस विषय में एक सत्य घटना है- राम कम्प्युटर प्रचालक का कार्य करता था। कार्यालय में एक नेटवर्क के रूप में कार्य विभिन्न स्तरों से होता हुआ कम्प्युटर तक पहुँचता है, जहाँ से अन्तिम रूप में कार्यालय प्रभारी के पास जाता है। इसके बाद हस्ताक्षर होकर अग्रिम कार्यवाही हेतु उच्च अधिकारियों को भेजा जाता है। एक बार किसी कारणवश कोई ग़लती रह गई जो विभिन्न स्तरों से होती हुई राम के पास भी ग़लत रूप में ही उच्च अधिकारी के पास पहुँच गई तथा उन्होंने भी बिना जाँचे फाइल को हस्ताक्षर करके आगे भेज दिया। अगले दिन राम का तो मौन था परन्तु अधिकारी बहुत अधिक व्यथित थे तथा अपना क्रोध उग्र शब्दों मे बोलकर राम के ऊपर निकालने लगे। राम शान्त भाव धारण किये रहा। नौकरी से बर्खास्त किये जाने की बात सुनकर भी वह स्थिर रहा। लेकिन इससे अगले दिन का दृश्य बड़ा सुहावना था। अधिकारी ने स्वयं राम को बुलाकर नम्रता से कहा कि वह दोष किसी एक व्यक्ति का न होकर सभी का था। कल भूलवश जो कुछ भी भला-बुरा आपको कहा ,कृपया उसके लिए मुझे क्षमा करना। अधिकारी के मुख से ये शब्द सुनकर राम को सुखद आश्चर्य हुआ। उसने शान्त भाव से कहा- श्रीमान, कोई बात नहीं, मैं भविष्य में और तन्मयता से कार्य करूँगा तथा इस तरह बात आई-गई हो गई। घटना का सार यही है कि यदि राम क्रोधी अधिकारी के समक्ष एक शब्द भी अपने बचाव में बोलता तो अधिकारी का गुस्सा और ही बढ़ता तथा वह राम का अहित कर सकता था। इस प्रकार मौन हमारे जीवन में बिगड़ी हुई बातों को बनाता है तथा हमें आत्म-संयम रखना सिखाता है।

मन का भी मौन तो मुख का भी मौन

मन का मौन और मुख का मौन दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरा संभव नहीं है। कई बार हम बाहर से तो मौन का बिल्ला लगा लेते हैं लेकिन अंदर विचारों का वेग और ही तीव्र गति से चलता रहता है जिससे कोई अधिक प्राप्ति नहीं होती है तथा कोई विशेष अनुभूति भी नहीं होती है। यदि कोई कार्य बिगड़ रहा हो तो मौन के बहाने चुप्पी साधने का भी कोई औचित्य नहीं है। मौन का अर्थ है कि हम कम-से-कम वाचा में आयें, लेकिन यदि बोलना ज़रूरी हो तो मधुर और मीठी वाणी में अल्प शब्दों का प्रयोग करें। हमारी साधना ऐसी हो कि मन कम-से-कम संकल्प उत्पन्न करे। कम संकल्प अर्थात गुणवत्तायुक्त तथा शक्तिशाली संकल्प। मौन की स्थिति में हमारा बुद्धियोग स्वभाविक रूप से परमात्मा से जुड़ा रहेगा तथा हम अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते हुए बहुत अच्छे अनुभव कर सकेंगे। मौन से अनेक प्राप्तियाँ हैं-

1. दीर्घायु- धरा पर पाये जाने वाले सभी प्राणियों में कछुए की आयु सर्वाधिक होती है। इसका कारण है कि कछुआ अपने अंगों को कार्य पूर्ण होते ही अन्दर समेट लेता है। हम भी जितना आवश्यक हो बोलें तथा जैसे ही कार्य सम्पन्न हो, अन्तर्मुखता की गुफा में चले जाएं। वाणी पर नियंत्रण रखने से काफी शक्ति क्षीण होने से बच जाती है, व्यर्थ से मुक्ति मिल जाती है, जिस कारण ही योगीजन दीर्घायु होते हैं।

2. वाणी से जौहर- जो साधक जितने अल्पभाषी होते हैं उनकी वाणी उतनी ही प्रभावशाली हो जाती है तथा एक स्थिति ऐसी आती है कि उनके मुख से निकले हुए वचन सफल होने लगते हैं। योगियों के बोल सामान्य न होकर महावाक्य बन जाते हैं। किसी से भी वे एक क्षण के लिए भी मिलते हैं तो ऐसी रूहानी अनुभूति कराते हैं कि वह व्यक्ति सदा ही उनसे मिलने को लालायित रहता है। ऐसे योगियों की वाणी सर्व हितकारी, सर्व कल्याणकारी, सर्व के मन को मोहने वाली, सर्व को सांत्वना देने वाली तथा सर्व प्रिय होती है। वे कम बोल में बहुत सारी बातें कह देते हैं।

मौन से अतीन्द्रिय सुखानुभूति - जब तक मन बाह्य बातों में रमण करता रहता है तो कभी सुख और कभी दुख -शेष पेज 11 पर

लखनऊ-सरोजनी नगर। विधायक शारदा प्रसाद शुक्ला को राखी बांधने के पश्चात ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सुनिता।

फाजिल्का। दैनिक जागरण के वरिष्ठ पत्रकार अमरलाल जी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.प्रिया।

अमेठी। उ.प्र. के भूतत्व मंत्री गायत्री प्रसाद प्रजापति एवं एसडीएम माताफेर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.सुमा व ब्र.कु.सुमित्रा।

सिरसा। सीनियर सुपरिन्टेंडेंट ऑफ पुलिस सौरभ सिंह को राखी बांधने के पश्चात ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.बिन्दु।

व्यारा। रेफरल हास्पिटल के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ.नैतिक भाई को ईश्वरीय प्रसाद देते हुए ब्र.कु.अरूणा।

बर्रा-कानपुर। सांसद राजाराम पाल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.शशि।

अनुभव

बाबा ने मुझे गहरी अनुभूतियां कराई

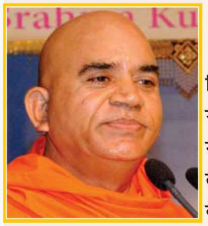

स्वामी विश्व आनंद

मैं राजकोट जिले के थोरियाली गांव से हूँ। मैं जब सात वर्ष का था तभी हमारे गांव में केरल से एक सन्यासी स्वामी रामानंद परमहंस जी आये, जिनके सानिध्य में रहते हुए मैंने ध्यान, प्राणायाम आदि बहुत कुछ सीखा और इतनी छोटी उम्र से ही मेरा रूझान सन्यास की ओर होने लगा। ऐसा शायद इसीलिए हुआ क्योंकि शिव बाबा को मुझे तैयार करना था और अपना बनाना था। मैं अभी तक के अपने जीवन काल में बहुत सी संस्थाओं के संपर्क में आया और बहुत से गुरू भी बनाये। मैं एक राष्ट्रभक्ति की संस्था से जुड़ा जहां मैंने महसूस किया कि मुझे हिन्दू धर्म के लिए नहीं बल्कि विश्व के लिए काम करना है।

राजकोट में जब ब्रह्माकुमारी संस्था प्लैटिनम जुबली उत्सव मना रही थी तो उन्होंने अनेक समाजसेवी संस्थाओं को कार्यक्रम में आमंत्रित किया था। इसमें मुझे भी निमंत्रण मिला। वहां जाने के बाद ब्र.कु.लालजी भाई जो तीस साल से इस संस्था से जुड़े हैं, उन्होंने ही मुझे ईश्वरीय ज्ञान से परिचित कराया। उसी समय उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं आपको संस्था के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउण्टआबू ले जाना चाहता हूँ। सुबह चार बजे आबू जाने के लिए गाड़ी तैयार रहेगी, आप आ सकोगे? मैं तो पहले से ही तड़प रहा था वहां जाने के लिए क्योंकि मैंने बहुत सुना था ब्रह्माकुमारी संस्था के बारे में। तो मेरी आश पूरी हुई और मुझे यहां आने का सुअवसर मिल ही गया। इस प्रकार मैं ब्रह्माकुमारीज समाज सेवा प्रभाग के कार्यक्रम में पहली बार आया। मैंने यहां आकर जाना कि मेरा जो संकल्प था कि विश्व की समाजसेवी संस्थाओं का संगठन करें, वो कार्य तो परमात्मा शिव ने ब्रह्मा बाबा और सभी ब्रह्माकुमार भाई-बहनों के द्वारा 75 वर्षों से जारी रखा हुआ है। मैंने तो इस महागंगा में एक छोटा सा प्रवाह ही जोड़ा है।

इसके बाद फिर मैं लालजी भाई के पास गया। वहां मेरा सात दिन का राजयोगा कोर्स हुआ और उसके बाद हर दिन मुरली क्लास में भी जाने लगा। फिर जब मुझे शिव बाबा से अव्यक्त मिलन में आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और शांतिवन परिसर में आकर बाबा के कमरे में बैठा तो बाबा ने मुझे बहुत ही गहरी अनुभूति कराई। मैं आंखें बंद करके बैठ गया और बाबा से पूछा कि बाबा, सभी मुझसे कहते हैं कि अब तो आप बाबा के बन चुके हैं तो अब ये सफेद वस्त्र कब धारण करेंगे? मैं सोंचता हूँ कि मुझे भगवान मिल गया, इसके सामने तो ये वस्त्र गौण हैं लेकिन आप ही मुझे बताओ कि मैं क्या करुं? जो आप कहेंगे, मैं वही करुंगा। तब मुझे अनुभव हुआ कि बाबा मेरे पास आने लगा और उनकी आंखों से प्रेम के आंसू बह रहे थे। बाबा ने मुझे अपनी गोद में बिठा लिया और मुझे प्यार करने लगा और कहा कि मैं तुम्हें 52 वर्षों से तैयार कर रहा था इसीलिए मैंने तुम्हें कई संस्थाओं में भेजा अनुभवी बनाने के लिए। मैंने इतने वर्षों तुम्हें दूर रखा और आज तुम्हें बुलाया है इसलिए ये प्रेम के आंसू छलक आए। बाबा ने कहा कि जब दादी प्रकाशमणि थीं तो वे विश्व के कोने-कोने से साधू-सन्यासियों को बुलाती थीं और उनका सम्मान करती थीं, आगे जाकर ये काम तुम्हें भी करना है। बाबा ने कहा कि तुम इसी चोले में रहोगे क्योंकि साधू-सन्यासियों की सेवा करने के लिए ही मैंने तुम्हें सन्यासी बनाया है।मैं पहले से ही मूर्ति उपासना आदि कर्मकाण्ड कम करता था इसलिए मेरा यहां आना सहज हो गया और जो शिष्य हमारे साथ जुड़ते थे उनके लिए भी सहज हो गया था क्योंकि ज्ञान में काफी समानता थी। लेकिन कुछ-कुछ लोग मुझसे ये सवाल भी पूछते थे कि आप इतने बड़े सन्यासी हो, आपने इतने सन्यासी बनाए, आप स्वयं आचार्य पद पर हैं किन्तु आप इन साधारण वस्त्रधारी ब्रह्माकुमारी बहनों के पास जाकर चरणों में बैठते हैं, ऐसा क्यों? मैं कहता हूँ, ये कोई साधारण बात नहीं है, ये जो आत्माएं हैं, जो साधारण वस्त्रों में नज़र आ रहे हैं और जितने भी ब्रह्माकुमार भाई-बहनें हैं ये जीते-जागते पावर हाऊस बन चुके हैं और डायरेक्ट परमात्मा के साथ वो कनेक्शन में हैं। रोज अमृतवेले वे परमात्मा से शक्ति लेते हैं और जो युक्तियां मिलती हैं और जो ज्ञान मिलता है वही ज्ञान लेने के लिए हम उनके चरणों में जाते हैं। जो हमारे साथ जुड़ते हैं या जो भी हमारे सम्पर्क में आते हैं उन्हें भी हम ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर भेजते हैं। कच्छ में भी हमारे बहुत सहयोगी हैं और तीस हज़ार लोग जो विदेश में सेवा दे रहे हैं वे सभी रूपों से सम्पन्न हैं, जब भी जरुरत होगी ये सभी बाबा के यज्ञ में हाज़िर हो जाएंगे।